

يَعْلَمُ غَيْبَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٨﴾

जानता है आस्मानों और ज़मीन के सब ग़ैब और **अल्लाह** तुम्हारे काम देख रहा है⁴⁵

﴿ ٢٥ آياتها ﴾ ﴿ ٥٠ سُوْرَةٌ ﴾ ﴿ ٣٢ مَكِّيَّةٌ ﴾ ﴿ ٣ رُكُوْعَاتُهَا ﴾

सूरए मक्किय्या है, इस में पेंतालीस आयतें और तीन रुकूअ हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला¹

قُلْ وَالْقُرْآنِ الْبَجِيدِ ۚ بَلْ عَجَبُوا أَنْ جَاءَهُمْ مُنذِرٌ مِنْهُمْ فَقَالَ

इज़्ज़त वाले कुरआन की क़सम² बल्कि उन्हें इस का अचम्बा (तश्जुब) हुआ कि उन के पास उन्ही में का एक उर सुनाने वाला तशरीफ़ लाया³ तो

الْكَافِرُونَ هَذَا شَيْءٌ عَجِيبٌ ۚ إِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا ۖ ذَلِكْ رَاجِعٌ

काफ़िर बोले यह तो अजीब बात है क्या जब हम मर जाएं और मिट्टी हो जाएंगे फिर जियेंगे यह पलटना

بَعِيدٌ ۚ قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنْقُصُ الْأَرْضُ مِنْهُمْ وَعِنْدَنَا كِتَابٌ

दूर है⁴ हम जानते हैं जो कुछ ज़मीन उन में से घटाती है⁵ और हमारे पास एक याद रखने वाली

حَفِیْظٌ ۚ بَلْ كَذَّبُوا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ فَهُمْ فِي أَمْرٍ مَرِیْجٍ ۝ أَفَلَمْ

किताब है⁶ बल्कि उन्होंने ने हक़ को झुटलाया⁷ जब वोह उन के पास आया तो वोह एक मुज़्तरिब बे सबात बात में हैं⁸ तो क्या

يَنْظُرُوا إِلَى السَّمَاءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنَاهَا وَزَيَّنَّاهَا وَمَا لَهَا مِنْ فُرُوجٍ ۝

उन्हीं ने अपने ऊपर आस्मान को न देखा⁹ हम ने उसे कैसा बनाया¹⁰ और संवारा¹¹ और उस में कहीं रक्ख़ा नहीं¹²

45 : उस से तुम्हारा कोई हाल छुपा नहीं न ज़ाहिर न मख़्फ़ी । 1 : “सूरए ” मक्किय्या है, इस में तीन रुकूअ, पेंतालीस आयतें, तीन सो सत्तावन कलिमे और एक हजार चार सो चोरानवे हर्फ़ हैं । 2 : हम जानते हैं कि कुपफ़ारे मक्का सय्यिदे आलम صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ पर ईमान नहीं लाए । 3 : जिस की अदालत व अमानत और सिद्क व रास्त बाज़ी को वोह ख़ूब जानते हैं और येह भी उन के दिल नशीन है कि ऐसे सिफ़ात का शख़्स सच्चा नासेह होता है वा बुजूद इस के उन का सय्यिदे आलम صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की नुबुव्वत और हुज़ूर के इन्ज़ार (डराने) से तश्जुब व इन्कार करना काबिले हैरत है । 4 : उन की इस बात के रद व जवाब में **अल्लाह** तआला फ़रमाता है : 5 : या'नी उन के जिस्म के जो हिस्से गोशत ख़ून हड्डियां वगैरा ज़मीन खा जाती है, उन में से कोई चीज़ हम से छुपी नहीं तो हम उन को वैसे ही ज़िन्दा करने पर कादिर हैं जैसे कि वोह पहले थे । 6 : जिस में उन के अस्मा आ'दाद और जो कुछ उन में से ज़मीन ने खाया सब साबित व मक्तूब व महफूज़ है । 7 : बिगैर सोचे समझे और हक़ से मुराद या नुबुव्वत है जिस के साथ मो'जिज़ाते बाहिरात हैं या कुरआने मजीद । 8 : तो कभी नबी صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ को शाइर, कभी साहिर, कभी काहिन और इसी तरह कुरआने पाक को शे'र व सेहूर व कहानत कहते हैं किसी एक बात पर क़रार नहीं । 9 : चश्मे बीना व नज़रे ए'तिबार से कि इस की आफ़ीनिश में हमारी कुदरत के आसार नुमायां हैं । 10 : बिगैर सुतून के बुलन्द किया । 11 : कवाक़िब के रोशन अजराम से । 12 : कोई ऐब व कुसूर नहीं ।

وَالْأَرْضَ مَدَدْنَاهَا وَالْقِيَامَ فِيهَا رَوَّاسِي وَأَنْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ

और ज़मीन को हम ने फैलाया¹³ और उस में लंगर डाले¹⁴ और उस में हर बा रौनक

بَهِيَجٍ ۙ تَبَصَّرَةٌ وَذِكْرَىٰ لِكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيبٍ ۝۸ وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَاءِ

जोड़ा उगाया सूझ और समझ¹⁵ हर रुजूअ वाले बन्दे के लिये¹⁶ और हम ने आस्मान से बरकत वाला

مَاءٍ مُّبْرَكًا فَانْبَتْنَا بِهِ جَبَّتٍ وَحَبَّ الْحَصِيدِ ۙ وَالنَّخْلَ بَسَقَتِ لَهَا

पानी उतारा¹⁷ तो उस से बाग़ उगाए और अनाज कि काटा जाता है¹⁸ और खजूर के लम्बे दरख्त जिन का

طَلْعٌ نَّضِيدٌ ۙ رِزْقًا لِلْعِبَادِ ۙ وَأَحْيَيْنَا بِهِ بَلْدَةً مَّيِّتًا كَذَلِكَ

पक्का गाभा (पका हुआ ताजा फल) बन्दों की रोज़ी के लिये और हम ने उस¹⁹ से मुर्दा (वीरान) शहर जिलाया (सर सब्ज किया)²⁰ यूँही

الْخُرُوجِ ۝۱۱ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَأَصْحَابُ الرَّسِّ وَشُودُ ۙ وَ

कब्रों से तुम्हारा निकलना है²¹ इन से पहले झुटलाया²² नूह की कौम और रस्स वालों²³ और समूद और

عَادُ وَفِرْعَوْنُ وَإِخْوَانُ لُوطٍ ۙ وَأَصْحَابُ الْأَيْكَةِ وَقَوْمِ تُبَّعٍ ۙ كُلٌّ

आद और फिराँन और लूत के हम कौमों और बन वालों और तुब्बअ की कौम ने²⁴ उन में हर

كَذَّبَ الرَّسُلَ فَحَقَّ وَعَيْدِ ۙ أَفَعَيَّنَا بِالْخَلْقِ الْأَوَّلِ ۙ بَلْ هُمْ

एक ने रसूलों को झुटलाया तो मेरे अज़ाब का वा'दा साबित हो गया²⁵ तो क्या हम पहली बार बना कर थक गए²⁶ बल्कि वोह

فِي لَبْسٍ مِّنْ خَلْقٍ جَدِيدٍ ۙ وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ وَنَعْلَمُ مَا

नए बनने से²⁷ शुबे में हैं और बेशक हम ने आदमी को पैदा किया और हम जानते हैं जो

13 : पानी तक । 14 : पहाड़ों के कि काइम रहे । 15 : कि इस से बीनाई व नसीहत हासिल हो 16 : जो **اَللّٰهُ** तआला के बदाइए सन्धत व अजाइबे खल्कत में नज़र कर के उस की तरफ़ रुजूअ करे । 17 : या'नी बारिश जिस से हर चीज़ की जिन्दगी और बहुत खैरो बरकत है । 18 : तरह तरह का गेहूँ, जव, चना वगैरा । 19 : बारिश के पानी 20 : जिस के नबातात खुशक हो चुके थे फिर उस को सब्ज़ा जार कर दिया । 21 : तो **اَللّٰهُ** तआला की कुदरत के आसार देख कर मरने के बा'द फिर जिन्दा होने का क्यूँ इन्कार करते हो । 22 : रसूलों को 23 : रस्स एक कूवाँ है जहां येह लोग मअ अपने मवेशियों के मुक़ीम थे और बुतों को पूजते थे, येह कूवाँ ज़मीन में धंस गया और उस के करीब की ज़मीन भी, येह लोग और उन के अम्वाल उस के साथ धंस गए । 24 : इन सब के तज़िकरे सूरए फुरकान व हज़र व दुखान में गुज़र चुके हैं । 25 : इस में कुरैश को तहदीद और सय्यदे आलम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की तसल्ली है कि आप कुरैश के कुफ़ से तंगदिल न हों हम हमेशा रसूलों की मदद फ़रमाते और उन के दुश्मनों पर अज़ाब करते रहे हैं । इस के बा'द मुन्करीने बअूस के इन्कार का जवाब इर्शाद होता है 26 : जो दोबारा पैदा करना हमें दुश्वार हो, इस में मुन्करीने बअूस के कमाले जहल का इज़हार है कि बा वुजूद इस इक़्ार के कि खल्क **اَللّٰهُ** तआला ने पैदा की इस के दोबारा पैदा करने को मुहाल और मुस्तब्दअ समझते हैं । 27 : या'नी मौत के बा'द पैदा किये जाने से ।

تَوَسَّوْسُ بِهِ نَفْسُهُ ۗ وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيدِ ۝١٦ اِذْ

जब हम हैं उस से ज़ियादा नज़दीक हैं²⁹ और हम दिल की रग से भी उस से ज़ियादा नज़दीक हैं²⁸ उस का नफ़्स डालता है

يَتَلَقَّى الْتَلَقِيْنَ عَنِ الْيَمِيْنِ وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيْدٌ ۝١٧ مَا يَلْفِظُ مِنْ

उस से लेते हैं दो लेने वाले³⁰ एक दाहने बैठा और एक बाएं³¹ कोई बात वोह ज़बान से

قَوْلٍ اِلَّا لَدَيْهِ رَاقِيْبٌ عَتِيْدٌ ۝١٨ وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ۗ

हक़ के साथ³⁴ हक़ की सख़्ती³³ और आई मौत की सख़्ती³² नहीं निकालता कि उस के पास एक मुहाफ़िज़ तय्यार न बैठा हो

ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدٌ ۝١٩ وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ ۗ ذٰلِكَ يَوْمُ الْوَعِيْدِ ۝٢٠

यह है जिस से तू भागता था और सूर फूका गया³⁵ यह है वा'दए अज़ाब का दिन³⁶

وَجَاءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّعَهَا سَاقِقٌ وَشَهِيدٌ ۝٢١ لَقَدْ كُنْتَ فِي غَفْلَةٍ

और हर जान यूँ हाज़िर हुई कि उस के साथ एक हांकने वाला³⁷ और एक गवाह³⁸ बेशक तू इस से ग़फ़लत

مِّنْ هٰذَا فَكَشَفْنَا عَنْكَ غِطَاءَكَ فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيْدٌ ۝٢٢ وَقَالَ

मैं था³⁹ तो हम ने तुझ पर से पर्दा उठाया⁴⁰ तो आज तेरी निगाह तेज़ है⁴¹ और उस का हम नशीन

28 : हम से उस के सराइर व ज़माइर छुपे नहीं। 29 : यह कमाले इल्म का बयान है कि हम बन्दे के हाल को खुद उस से ज़ियादा जानने वाले हैं, "वरीद" वोह रग है जिस में खून जारी हो कर बदन के हर हर जुज़ में पहुंचता है, येह रग गरदन में है, मा'ना येह हैं कि इन्सान के अज़्ज़ा एक दूसरे से पर्दे में हैं मगर अब्बास तआला से कोई चीज़ पर्दे में नहीं। 30 : फ़िरिश्ते और वोह इन्सान का हर अमल और उस की हर बात लिखने पर मामूर हैं। 31 : दाहनी तरफ़ वाला नेकियां लिखता है और बाई तरफ़ वाला बदिंयां, इस में इज़्हार है कि अब्बास तआला फ़िरिश्तों के लिखने से भी ग़नी है, वोह अख़्क़ल ख़फ़ि़य्यात (बारीक पोशीदगियों) का जानने वाला है, ख़तराते नफ़्स तक उस से छुपे नहीं, फ़िरिश्तों की किताबत हस्बे इक्लजाए हिकमत है कि रोज़े कियामत नामहाए आ'माल हर शख़्स के उस के हाथ में दे दिये जाएं। 32 : ख़्वाह वोह कहीं हो सिवाए वक्ते क़जाए हाज़त और वक्ते जिमाअ के, इस वक्ते येह फ़िरिश्ते आदमी के पास से हट जाते हैं। मसअला : इन दोनों हालतों में आदमी को बात करना जाइज़ नहीं ताकि उस के लिखने के लिये फ़िरिश्तों को इस हालत में उस से क़रीब होने की तकलीफ़ न हो, येह फ़िरिश्ते आदमी की हर बात लिखते हैं, बीमारी का कराहना तक और येह भी कहा गया है कि सिर्फ़ वोही चीज़ें लिखते हैं जिन में अज़्रो सवाब या गिरिफ़्त व अज़ाब हो। इमाम बग़वी ने एक हदीस रिवायत की है कि जब आदमी एक नेकी करता है तो दहनी तरफ़ वाला फ़िरिश्ता दस लिखता है और जब बदी करता है तो दहनी तरफ़ वाला फ़िरिश्ता बाई जानिब वाले फ़िरिश्ते से कहता है कि अभी तवक्कुफ़ कर शायद येह शख़्स इस्तिफ़ार कर ले, मुन्किरीने बअूस का रद फ़रमाने और अपने कुदरत व इल्म से उन पर हुज़्जतें काइम करने के बा'द उन्हें बताया जाता है कि वोह जिस चीज़ का इन्कार करते हैं वोह अन्करीब उन की मौत और कियामत के वक्ते पेश आने वाली है और सीगए माज़ी से उन की आमद की ता'बीर फ़रमा कर उस के कुर्ब का इज़्हार किया जाता है। चुनान्वे, इशाद होता है : 33 : जो अक्ल व हवास को मुख़ाल व मुकदर कर देती है। 34 : हक़ से मुराद या हकीकते मौत है या अम्रे आख़िरत जिस को इन्सान खुद मुआयना करता है या अन्जामे कार सआदत व शक़ावत और सकरात की हालत में मरने वाले से कहा जाता है कि मौत 35 : बअूस के लिये 36 : जिस का अब्बास तआला ने कुफ़फ़ार से वा'दा फ़रमाया था। 37 : फ़िरिश्ता जो उसे महशर की तरफ़ हांके। 38 : जो उस के अमलों की गवाही दे। हज़रते इब्ने अब्बास رضی اللّٰهُ تعالٰیٰ عنہما ने फ़रमाया कि हांकने वाला फ़िरिश्ता होगा और गवाह खुद उस का अपना नफ़्स। ज़ह्हाक का कौल है कि हांकने वाला फ़िरिश्ता है और गवाह अपने आ'जाए बदन हाथ पाउं वगैरा। हज़रते उस्माने ग़नी رضی اللّٰهُ تعالٰیٰ عنه ने बरसरे मिम्बर फ़रमाया कि हांकने वाला भी फ़िरिश्ता है और गवाह भी फ़िरिश्ता। (مس) फिर काफ़िर से कहा जाएगा : 39 : दुन्या में 40 : जो तेरे दिल और कानों और आंखों पर पड़ा था 41 : कि तू उन चीज़ों को देख रहा है जिन का दुन्या में इन्कार करता था।

قَرِيْبُهُ هَذَا مَا لَدَيْ عَتِيْدٍ ۝۲۳۱ اَلْقِيَا فِيْ جَهَنَّمَ كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيدٍ ۝۲۳۲

फ़िरिस्ता⁴² बोला यह है⁴³ जो मेरे पास हाज़िर है हुक़्म होगा तुम दोनों जहन्म में डाल दो हर बड़े नाशुके हटधर्म को

مَّاءٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ مُّرِيْبٍ ۝۲۳۳ اَلَّذِيْ جَعَلَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَاَلْقِيْهُ

जो भलाई से बहुत रोकने वाला हृद से बढ़ने वाला शक करने वाला⁴⁴ जिस ने **अल्लाह** के साथ कोई और मा'बूद ठहराया तुम दोनों

فِي الْعَذَابِ الشَّدِيْدِ ۝۲۳۴ قَالَ قَرِيْبُهُ رَبَّنَا مَا أَطْغَيْتُهُ وَلٰكِنْ كَانَ فِي

उसे सख़्त अज़ाब में डालो उस के साथी शैतान ने कहा⁴⁵ हमारे रब मैं ने इसे सरकश न किया⁴⁶ हां यह आप ही

صَلٰى بَعِيْدٍ ۝۲۳۵ قَالَ لَا تَخْتَصِمُوْا لَدَيّْ وَاَقْدَمْتُ اِلَيْكُمْ

दूर की गुमराही में था⁴⁷ फ़रमाएगा मेरे पास न झगड़ो⁴⁸ मैं तुम्हें पहले ही अज़ाब का

بِالْوَعِيْدِ ۝۲۳۶ مَا يَبْدُلُ الْقَوْلُ لَدَيّْ وَمَا اَنَا بِظَلّٰمٍ لِّلْعَبِيْدِ ۝۲۳۷

डर सुना चुका था⁴⁹ मेरे यहां बात बदलती नहीं और न मैं बन्दों पर जुल्म करूँ

يَوْمَ نَقُوْلُ لِيْجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَاتِ وَتَقُوْلُ هَلْ مِنْ مَّزِيْدٍ ۝۲۳۸ وَ

जिस दिन हम जहन्म से फ़रमाएंगे क्या तू भर गई⁵⁰ वोह अज़्र करेगी कुछ और ज़ियादा है⁵¹ और

اُرْلَقْتَ الْجَنَّةَ لِّلْمُتَّقِيْنَ غَيْرِ بَعِيْدٍ ۝۲۳۹ هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ لِكُلِّ

पास लाई जाएगी जन्नत परहेज़ गारों के कि उन से दूर न होगी⁵² यह है वोह जिस का तुम वा'दा दिये जाते हो⁵³ हर रूजूअ लाने

اَوْ اٰبِ حَفِيْظٍ ۝۲۴० مِّنْ خَشْيِ الرَّحْمٰنِ بِالْغَيْبِ وَاَجَاءَ بِقَلْبٍ مُّنِيْبٍ ۝۲४१

वाले निगहदाशत वाले के लिये⁵⁴ जो रहमान से बे देखे डरता है और रूजूअ करता हुवा दिल लाया⁵⁵

42 : जो उस के आ'माल लिखने वाला और उस पर गवाही देने वाला है। 43 : इस का नाम ए आ'माल (مَارَكٌ وَمَاَزِنٌ)। 44 : दीन में 45 : जो दुन्या में उस पर मुसल्लत था। 46 : यह शैतान की तरफ से काफ़िर का जवाब है जो जहन्म में डाले जाते वक़्त कहेगा कि ऐ हमारे रब मुझे शैतान ने वरगलाया, इस पर शैतान कहेगा कि मैं ने इसे गुमराह न किया। 47 : मैं ने इसे गुमराही की तरफ बुलाया इस ने कबूल कर लिया, इस पर इशदि इलाही होगा **अल्लाह** तआला 48 : कि दारुल जज़ा और मौक़िफ़े हिसाब में झगड़ा कुछ नाफ़ेअ नहीं 49 : अपनी किताबों में और अपने रसूलों की ज़बानों पर मैं ने तुम्हारे लिये कोई हुज्जत बाकी न छोड़ी 50 : **अल्लाह** तआला ने जहन्म से वा'दा फरमाया है कि इसे जिनों और इन्सानों से भरेगा इस वा'दे की तहकीक के लिये जहन्म से यह सुवाल फरमाया जाएगा 51 : इस के मा'ना यह भी हो सकते हैं कि अब मुझ में गुन्जाइश बाकी नहीं मैं भर चुकी और यह भी हो सकते हैं कि अभी और भी गुन्जाइश है 52 : अर्श के दहनी तरफ जहां से अहले मौक़िफ़ उस को देखेंगे और उन से कहा जाएगा 53 : रसूलों की मा'रिफ़त दुन्या में 54 : रूजूअ लाने वाले से वोह मुराद है जो मा'सियत को छोड़ कर ताअत इख़्तियार करे, सईद बिन मुसय्यिब ने फरमाया "اَوْ اٰبِ" वोह है जो गुनाह करे फिर तौबा करे, फिर उस से गुनाह सादिर हो फिर तौबा करे और निगाह दाशत वाला वोह जो **अल्लाह** के हुक़्म का लिहाज़ रखे। हज़रते इब्ने अब्बास **رضي الله تعالى عنهم** ने फरमाया : जो अपने आप को गुनाहों से महफूज़ रखे और उन से इस्तिफ़ार करे और यह भी कहा गया है कि जो **अल्लाह** तआला की अमानतों और उस के हुकूक की हिफ़ाज़त करे और यह भी बयान किया गया है कि जो ताअत का पाबन्द हो, खुदा और रसूल के हुक़्म बजा लाए और अपने नफ़्स की निगहबानी करे या'नी एक दम भी यादे इलाही से गाफ़िल न हो, पासे अन्फ़ास करे :

ادْخُلُوهَا بِسَلَامٍ ۖ ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُلُوْدِ ﴿٣٧﴾ لَهُمْ مَا يَشَاءُوْنَ فِيْهَا وَ

उन से फ़रमाया जाएगा जन्नत में जाओ सलामती के साथ⁵⁶ यह हमेशगी का दिन है⁵⁷ उन के लिये है उस में जो चाहें और

لَدَيَّا مَزِيْدٌ ﴿٣٨﴾ وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ اَشَدُّ مِنْهُمْ بَطْشًا

हमारे पास इस से भी ज़ियादा है⁵⁸ और उन से पहले⁵⁹ हम ने कितनी संगतों (क़ौमों) हलाक फ़रमा दीं कि गिरिफ्त में उन से सख्त थीं⁶⁰

فَتَقَبَّوْا فِي الْبِلَادِ ۗ هَلْ مِنْ مَّجِيْصٍ ﴿٣٩﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَذِكْرًا لِّمَنْ

तो शहरों में कावशों की⁶¹ है कहीं भागने की जगह⁶² बेशक इस में नसीहत है उस के लिये जो

كَانَ لَهٗ قَلْبٌ اَوْ اَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ شَهِيدٌ ﴿٤٠﴾ وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ

दिल रखता हो⁶³ या कान लगाए⁶⁴ और मुतवज्जेह हो और बेशक हम ने आस्मानों

وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ اَيَّامٍ ۗ وَ مَا مَسَّنَا مِنْ لَّعُوْبٍ ﴿٤١﴾

और ज़मीन को और जो कुछ इन के दरमियान है छ⁶⁵ दिन में बनाया और तकान हमारे पास न आइ⁶⁵

فَاَصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَ

तो उन की बातों पर सब्र करो और अपने रब की ता'रीफ़ करते हुए उस की पाकी बोलो सूरज चमकने से पहले और

قَبْلَ الْعُرُوْبِ ﴿٤٢﴾ وَمِنَ الْبَيْلِ فَسَبِّحْهُ وَاَدْبَارَ السُّجُوْدِ ﴿٤٣﴾ وَاسْتَبِغْ

डूबने से पहले⁶⁶ और कुछ रात गए उस की तस्बीह करो⁶⁷ और नमाज़ों के बा'द⁶⁸ और कान लगा कर सुनो

اگر تو پاسداری پاسِ اَنفاسِ بَسَطَانِي رَسَانَتَدَّتْ اُرِيِيْ پَس
تُرَا يَك پَنَد بَس دَر بَر دُو عَالَمِ زَجَانَت بَر نِيَايَد بَع خَدَام

(तरजमा : “अगर तू अपने सांसों की हिफ़ाज़त करे तो लोग तुझे इस के सबब बादशाह बना लेंगे, दुन्या व आखिरत में तेरे लिये यह एक ही नसीहत काफ़ी है। बे हुक्मे खुदा तू सांस भी नहीं ले सकता।”)

55 : या'नी इख़लास मन्द ताअत पज़ीर सहीहुल अक़ीदा दिल 56 : बे ख़ौफ़ो ख़तूर अम्मो इल्मीनान के साथ, न तुम्हें अज़ाब हो न तुम्हारी ने'मतें ज़ाइल हों। 57 : अब न फ़ना है न मौत। 58 : जो वोह तलब करें और वोह दीदारे इलाही व तजल्लिले रब्बानी है जिस से हर जुमुआ को दारे करामत में नवाजे जाएंगे। 59 : या'नी आप के ज़माने के कुफ़फ़ार से क़ब्ल 60 : या'नी वोह उम्मतें इन से क़बी और ज़बर दस्त थीं। 61 : और जुस्तज़ू में जा बजा फिरा किये। 62 : मौत और हुक्मे इलाही से, मगर कोई ऐसी जगह न पाई।

63 : दिले दाना। शिब्ली सूरुह फ़ुदस ने फ़रमाया कि कुरआनी नसाएह से फ़ैज़ हासिल करने के लिये क़ल्बे हाज़िर चाहिये जिस में त्रफ़तुल ऐन (लम्हा भर) के लिये भी गुफ़लत न आए। 64 : कुरआन और नसीहत पर 65 शाने नुज़ूल : मुफ़स्सरीन ने कहा कि येह आयत यहूद के रद में नाज़िल हुई जो येह कहते थे कि **اَللّٰهُ** तआला ने आस्मान व ज़मीन और इन के दरमियानी काएनात को छ⁶ रोज़ में बनाया जिन में से पहला यक़्शम्बा (इतवार) है और पिछला जुमुआ, फिर वोह **مَعَاذِ اللّٰهِ** थक गया और सनीचर (हफ़्ता) को उस ने अर्श पर लैट कर आराम लिया। इस आयत में उन का रद है कि **اَللّٰهُ** तआला इस से पाक है कि थके, वोह कादिर है कि एक आन में सारा आलम बना दे, हर चीज़ को हस्बे इक्तिज़ाए हिक्मत हस्ती अता फ़रमाता है। शाने इलाही में यहूद का येह कलिमा सय्यिदे आलम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** को बहुत ना गवार हुवा और शिदते गुज़ब से चेहरए मुबारक पर सुख़ी नुमूदार हो गई तो **اَللّٰهُ** तआला ने आप की तस्कीन फ़रमाई और ख़िताब हुवा। 66 : या'नी फ़ज़्र व ज़ोहर व अस् के वक़्त 67 : या'नी वक़्ते

يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادُ مِنْ مَّكَانٍ قَرِيبٍ ﴿٣١﴾ يَوْمَ يَسْمَعُونَ الصَّيْحَةَ

जिस दिन पुकारने वाला पुकारेगा⁶⁹ एक पास जगह से⁷⁰ जिस दिन चिंघाड़ सुनेंगे⁷¹

بِالْحَقِّ ط ذَلِكَ يَوْمُ الْخُرُوجِ ﴿٣٢﴾ إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي وَنُمِيتُ وَإِنَّا

हक़ के साथ यह दिन है क़ब्रों से बाहर आने का बेशक हम जिलाएं और हम मारें और हमारी

الْمَصِيرُ ﴿٣٣﴾ يَوْمَ تَشَقُّقُ الْأَرْضُ عَنْهُمْ سِرَاعًا ط ذَلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا

तरफ़ फिरना है⁷² जिस दिन ज़मीन उन से फटेगी तो जल्दी करते हुए निकलेंगे⁷³ यह हशर है हम को

يَسِيرٌ ﴿٣٤﴾ نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِجَبَّارٍ قف

आसान हम ख़ूब जान रहे हैं जो वोह कह रहे हैं⁷⁴ और कुछ तुम उन पर ज़ब्र करने वाले नहीं⁷⁵

فَذَكِّرْ بِالْقُرْآنِ مَنْ يَخَافُ وَعِيدِ ﴿٣٥﴾

तो कुरआन से नसीहत करो उसे जो मेरी धमकी से डरे

﴿٣٥﴾ ﴿٣٤﴾ ﴿٣٣﴾ ﴿٣٢﴾ ﴿٣١﴾ ﴿٣٠﴾ ﴿٢٩﴾ ﴿٢٨﴾ ﴿٢٧﴾ ﴿٢٦﴾ ﴿٢٥﴾ ﴿٢٤﴾ ﴿٢٣﴾ ﴿٢٢﴾ ﴿٢١﴾ ﴿٢٠﴾ ﴿١٩﴾ ﴿١٨﴾ ﴿١٧﴾ ﴿١٦﴾ ﴿١٥﴾ ﴿١٤﴾ ﴿١٣﴾ ﴿١٢﴾ ﴿١١﴾ ﴿١٠﴾ ﴿٩﴾ ﴿٨﴾ ﴿٧﴾ ﴿٦﴾ ﴿٥﴾ ﴿٤﴾ ﴿٣﴾ ﴿٢﴾ ﴿١﴾

सूरए ज़ारियात मक्किय्या है, इस में साठ आयतें और तीन रुकूअ हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला¹

وَالذِّرْيَتِ ذُرُوءًا ﴿١﴾ فَالْحَمَلَتِ وَقْرًا ﴿٢﴾ فَالْجُرَيْتِ يُسْرًا ﴿٣﴾

क़सम उन की जो बिखरे कर उड़ाने वालियां² फिर बोझ उठाने वालियां³ फिर नर्म चलने वालियां⁴

मगरिब व इशा व तहज्जुद 68 हदीस : हज़रते इब्ने अब्बास رضي الله تعالى عنهما से मरवी है : सय्यिदे आलम صلى الله تعالى عليه وسلم ने तमाम नमाज़ों के बा'द तस्बीह करने का हुक्म फ़रमाया। (بخاری) हदीस : सय्यिदे आलम صلى الله تعالى عليه وسلم ने फ़रमाया जो शख्स हर नमाज़ के बा'द तैंतीस 33 मरतबा "سُبْحَانَ اللَّهِ" तैंतीस 33 मरतबा "الْحَمْدُ لِلَّهِ" तैंतीस 33 मरतबा "اللَّهُ أَكْبَرُ" और एक मरतबा "لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ" पढ़े उस के गुनाह बख़्शे जाएंगे चाहे समुन्दर के झागों के बराबर हों या'नी बहुत ही कसीर हों। (مسلم شريف) 69 : या'नी हज़रते इसराफ़ील عليه السلام 70 : या'नी सख़ए बैतुल मक्दिस से जो आस्मान की तरफ़ ज़मीन का सब से क़रीब मक़ाम है, हज़रते इसराफ़ील की निदा यह होगी : ऐ गली हुई हड्डियो ! बिखरे हुए जोड़ो ! रेज़ा! रेज़ा! शुदा गोश्तो ! परागन्दा बालो ! **अल्लाह** तआला तुम्हें फ़ैसले के लिये जम्अ होने का हुक्म देता है। 71 : सब लोग। मुराद इस से नफ़ख़ए सानिया (दूसरी मरतबा सूर फूका जाना) है। 72 : आख़िरत में। 73 : मुदें मेहशर की तरफ़। 74 : या'नी कुफ़फ़ारे कुरैश। 75 : कि उन्हें बज़ोर इस्लाम में दाख़िल करो, आप का काम दा'वत देना और समझा देना है। (وكان هذا قبل الامر بالقتال) 1 : सूरए ज़ारियात मक्किय्या है, इस में तीन रुकूअ, साठ आयतें, तीन सो साठ कलिमे, एक हज़ार दो सो उन्तालीस हर्फ़ हैं। 2 : या'नी वोह हवाएं जो खाक वगैरा को उड़ती हैं। 3 : या'नी वोह घटाएं और बदलियां जो बारिश का पानी उठाती हैं। 4 : वोह कशियतां जो पानी में ब सहूलत चलती हैं।